DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-2,CONTRIBUTION OF CHICAGO SCHOOL

LECTURE-17

शिकागो स्कूल का योगदान (CONTRIBUTION OF CHICAGO SCHOOL)

प्रकार्यवाद पहला अमेरिकन मनोवैज्ञानिक स्कूल था |इस पर प्रकाश डालते हुए हाईब्रेडर ने कहा है, "प्रकार्यवाद में अमेरिकन मनोविज्ञान टिचेनेरियन था उन्टियन स्कूल के प्रभुत्व के विरुद्ध अपना पहला निश्चित एवं संगठित स्थान बना पाया |हालांकि इसके लिए सभी तैयारी विलियम जेम्स ने कर ली थी ,इस स्कूल की संस्थापना जॉन डीवी तथा जेम्स रॉलैड एंजिल द्वारा 1894 में शिकागो विश्वविद्यालय में की गयी |हार्वे कार्र को इस स्कूल का विकासक माना गया है क्योंकि उनके ही कार्य अवधी में प्रकार्यवाद अपनी लोकप्रियता की चरम सीमा पर पहुँच सकने में समर्थ हो पाया |बाद में रोबर्ट सेसन्स वुडवर्थ द्वारा इस स्कूल के विचारधाराओं को कोलंबिया विश्वविद्यालय में लाकर प्रभावी बनाया गया |उनका मनोविज्ञान शिकागो प्रकार्यवादियों के मनोविज्ञान से थोड़ा भिन्न था और वे अपने इस सम्प्रदाय का नाम गत्यात्मक मनोविज्ञान रखे |हालाँकि प्रकार्यवाद कभी एक उच्च स्तरीय सम्प्रदाय नहीं रहा

लेकिन प्रकार्यवादी मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यक्ति के व्यवहार एवं चेतन से भी होता है जिसके द्वारा वह पर्यावरण में समायोजन करता है |इस तरह से प्रकार्यवाद मनोविज्ञान व्यवहार तथा चेतना एवं पूर्ववर्ती कारको के बीच के प्रकार्यात्मक सम्बन्ध का भी अध्ययन करता है | प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट समझने के लिए यह आवश्यक है की महत्वपूर्ण प्रकार्यवादियों के योगदान का वर्णन किया जाय |प्रकार्यवाद के तीनो संस्थापक है _ जॉन डीवी ,जेम्स राँलैड तथा हार्वे कार्र |

शिकागो स्कूल में जॉन डीवी का योगदान निम्नांकित है :-

जॉन डीवी (john diwey 1859-1952)-जॉन डीवी का जन्म 1859 ई० में बर्मोंट के पास बर्लिगटन नामक स्थान पर हुआ |शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे कुछ वर्षो तक स्कूल में अध्ययन कार्य किये और इसके साथ साथ दर्शनशास्त्र के अध्ययन में भी लगे रहे |1884 में वे जॉन हाँपकिन्स विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में पी$_o$एच$_o$डी की उपाधी प्राप्त किये |वे माईनोसोटा तथा मिशिगन में भी अध्ययन कार्य किये |वे हारवार्ड विश्वविद्यालय में विलियम जेम्स से भी शिक्षा ग्रहण किये 1894 में वे दर्शनशास्त्र में प्राचार्य के पद पर शिकागो विश्वविद्यालय चले आये |और यहीं वे प्रकार्यवाद की स्थापना किये |1904 में शिकागो विश्वविद्यालय छोड़कर कोलंबिया विश्वविद्यालय चले गये |यहाँ से वे अवकाश प्राप्त किये |डीवी ने एंजिल के सहयोग से प्रकार्यवाद की स्थापना शिकागो विश्वविद्यालय में 1894 में किया |

डीवी ने 1886 में एक पुस्तक psychology का प्रकाशन किया जो काफी लोकप्रिय हुई |1896 में डीवी एक लघुशोध-पत्र जिसका शीर्षक था ,THE REFLEX ARE CONCEPT IN PSYCHOLOGY" का प्रकाशन किये और इसी पत्र

के प्रकाशन के प्रकार्यवाद का शुभ आरम्भ हुआ |सचमुच में ,इस पत्र में वे संरचनावादियों के मनोविज्ञानिक तत्ववाद पर कड़ा प्रहार किये |उन्होंने यह मत व्यक्त की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को उनके तत्व या अंश में बाँटकर अध्ययन नहीं करना चाहिए बल्कि उनका अध्ययन समग्र रूप में (AS A WHOLE) करना चाहिए |इस तरह से वे संरचनावादियों के आणाविक विश्लेषण को मनोवैज्ञानिक क्रिया के चवर्णक विश्लेषण में स्थापित करने की कोशिश किये |उन्होंने व्यवहार के प्रकार्य विशेषकर अनुकूली प्रकार्य (ADAPTATIVE FUNCTION)पर अधिक बल डाला है |उन्होंने यह भी बतलाया है की हमे विश्लेषण ,चवर्णक इकाई ना की आणविक इकाई जो संरचनावादियों का था ,के रूप में करना चाहिए |

डीवी के शोध-पत्र से निम्नांकित दो बातो के बारे में स्पष्ट सुचना मिलती है –

(i)व्यवहार के अध्ययन में चवर्णक उपागम (MOLOR APPROCH) न की आणविक उपागम (MOLECULAR ANALYSIS) पर बल देना चाहिए |

(ii)व्यवहार का अध्ययन उसके प्रकार्य ख़ास कर अनुकूली प्रकार्य के रूप में किया जाना चाहिए |डीवी का उक्त शोध-पत्र मात्र को ही प्रकार्यवादी मनोविज्ञान का मुख्य योगदान माना गया है |शिकागो विश्वविद्यालय में बाकी बचे अंतिम समय को वे शिक्षा तथा दर्शनशास्त्र में अधिक लगायें| उन्होंने प्रगतिशील शिक्षा आन्दोलन का शुरुआत किया और शिक्षा में उपयोगितावाद के महत्व का वर्णन किया |वे इस बात पर बल डाले की शिक्षा ही जिन्दगी है सीखना ही मूल व्यवहार है तथा प्रशिक्षण को छात्र-उन्मुखी न की विषय-उन्मुखी होना चाहिए |1904 में वे शिकागो विश्वविद्यालय छोर कर कोलंबिया विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्र के प्राचार्य पद पर चले गये और अपने जीवन वृत्ति के बाकी समय वही गुजारे

अर्थात वे वही से अवकाश प्राप्त किये |जिन्दगी के अंतिम कुछ वर्षो में वे एक सामाजिक दर्शनशास्त्री के रूप में रहे और उस रूप में उनका सम्बन्ध मानव कल्याण से अधिक रहा |अपने उपयोगितावाद में वे स्पष्टतः इस बात पर बल डाले की ज्ञान का उपयोग व्यक्ति के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आवश्यक है |अतः समायोजन प्रक्रिया में ज्ञान सक्रिय भूमिका निभाता है |इस तरह के विचारों का प्रकार्यवादी मनोविज्ञान पर काफी अनुकूल प्रभाव पड़ा |